रिपोर्ट

हिंद स्वराज और भारतीय ज्ञान परंपरा
तथा
हिंदी पत्रकारिता का स्वरूप और चुनौतियाँ
विशेष व्याख्यान

हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा की ओर से आयोजित विशेष व्याख्यानमाला के अंतर्गत 31.05.2019 को पूर्वाह्न 11 बजे विशेष व्याख्यान का आयोजन महादेवी वर्मा सभागार में हुआ। कार्यक्रम अध्यक्षता विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति, प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने की। विशेष व्याख्यान के लिए मुंबई विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्रविभाग से डॉ. नमिता निंबाल्कर सभागार में उपस्थित रहीं साथ ही नागपुर से हमारे बीच पधारे दैनिक भास्कर के समूह संपादक, श्री प्रकाश दुबे भी विशेष व्याख्यान के लिए सभागार में उपस्थित रहे। कार्यक्रम की विषय प्रस्तावना समाजकार्य केंद्र के निदेशक, प्रो. मनोज कुमार ने प्रस्तुत की। स्वागत वक्तव्य गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग केअध्यक्ष, प्रो. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी ने दिया। कार्यक्रम का सकुशल संचालन हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र के संयुक्त निदेशक, प्रो. अवधेश कुमार ने किया।

'हिंद स्वराज और भारतीय ज्ञान परंपरा' विषय पर प्रो. नमिता निंबाल्कर ने विशेष व्याख्यान दिया । उन्होंने कहा कि बहुत सारे सवाल हिंद स्वराज को लेकर हमारे मन में उठते हैं, उन सवालों की पृष्ठभूमि भी हमें देखनी चाहिए। गांधी यह सोच रहे थे कि क्या हिंसा का हम अपने विचारों से जवाब दे सकते हैं । गांधी एक अलेटरनेट नैरेटिब तलाश रहे थे । गांधी पर लियो टॉलस्टाय का बहुत प्रभाव रहा है । उनसे उन्होंने बहुत कुछ ग्रहण किया है । हिंद स्वराज संपादक और पाठक के बीच संवाद शैली में है । यह भारतीय संस्कृति की बहुत पुरानी परंपरा रही है ।पश्चिम के बडे विद्वान और विचारक प्लेटो ने भी डॉयलाग शैली में अपने ग्रंथ लिखे हैं । इसमें हम दूसरे विचारों और व्यक्तिव को नकार नहीं पाते । इसमें 'अन्य' की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है । गांधी के हिंद स्वराज में यही 'अन्य' है जिसका वह भरपूर आदर करते हैं । इसे स्वराज की महत्वपूर्ण भूमिका में देखा जा सकता है । हिंद स्वराज का मुख्य स्तम्भ आधुनिक सभ्यता पर विचार विमर्श करना रहा है । इसमें स्वतंत्रता और समानता की अवधारणा को गांधी ने बहुत व्यापक तौर पर अभिव्यक्त किया है साथ ही स्वतंत्रता और समानता के बीच के संबंध और विरोधाभासों को गांधी ने बहुत तरजीह दी है । वे आधुनिक सभ्यता को सिर्फ भारत के लिए ही हानिकारक नहीं मानते बल्कि पश्चिम के लिए भी खतरनाक मानते हैं। गांधी आधुनिक सभ्यता को अधार्मिक बनाने वाली सभ्यता कहते हैं । गांधी अधार्मिकता को अनैतिकता के रूप में देखते हैं । उन्होंने कहा कि गांधी को हम किसी मंदिर में बिठाना नहीं चाहते हमें उनका प्रासंगिक मूल्यांकन करना चाहिए ।

कार्यक्रम में दूसरा व्याख्यान **'हिंदी पत्रकारिता का स्वरूप और चुनौतियां'** विषय पर सम्मानित पत्रकार श्री प्रकाश दूबे द्वारा दिया गया। उन्होंने कहा कि मैं जिस व्यक्ति को पढकर सबसे ज्यादा प्रभावित हुआ था वह हैं-सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'।निराला के आदर्शों पर उन्होंने प्रकाश डाला, आगे उन्होंने कहा कि हिंदी का पहला अखबार **'उदन्त मार्तण्ड'** हमारी हिंदी पत्रकारिता को नया पाठ पढाने का काम करता है। पत्रकारिता की शुरूआत हमारे साहित्यिक इतिहास से जुडी है, रामायण और महाभारत में पत्रकारिता के प्रारंभिक स्रोत देखे जा सकते हैं। संजय महाभारत कालीन पहला भारतीय पत्रकार है।

उन्होंने कहा कि पत्रकारिता में यदि देखें तो आज जो चुनौतियां हैं वह कोई बहुत नयी नहीं हैं। इन चुनौतियों का सामना पत्रकारिता बहुत पहले से करती आयी है। उन्होंने कई उदाहरण देकर इसे स्पष्ट किया। बंगाल गजट, हिंदोस्थान, हिंदुस्तान टाइम्स, आदि अखबारों के संपादको से जुडे कई मार्मिक प्रसंगों की उन्होंने चर्चा की। उन्होंने भारतेंदु हरिश्चंद्र, बालकृष्ण भट्ट, प्रताप नारायण मिश्र, महाबीर प्रसाद द्विवेदी, बालमुकुंद गुप्त जैसे पत्रकारों की चर्चा अपने व्याख्यान में की। उन्होंने कहा कि भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अपनी पत्रिका में एक सूचना छापी थी कि गोवध निवारण पर जो अच्छी रचना लिखेगा उसे 5-25 रूपये तक पुरस्कार दिया जायेगा। तब ऐसे विकल्पों की पत्रकारिता थी और आज गोमांस की आशंका को लेकर जिस तरह लोगों की पिटाई हो रही है वह बहुत दुखद है। हमें नैतिकता से उदण्डता के विरूद्ध लडने की जरूरत है। हमें गांधी से भी यह सीख मिलती है। वह उपेदशात्मकता के खिलाफ सवाल पूछने की वकालत करते हैं।

उन्होंने कहा कि चीजों को सही तरीके से प्रस्तुत करना चाहिए, यदि स्थिति स्पष्ट न हो तो संवाद करना चाहिए-यह मैंने गांधी से सीखा।

अध्यक्षीय वक्तव्य विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति, प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने दिया। उन्होंने दोनों विषयों का समन्वय करते हुए कहा कि हिंदी पत्रकारिता को गांधी से काटकर नहीं देखा जा सकता। गांधी को हम पत्रकार, युगनिर्माता, उपदेशक के रूप में जानते हैं, लेकिन अपनी पत्रकारिता में गांधी उपदेशात्मकता से बचते हैं। हिंद स्वराज कोई उपदेश नहीं है। जब पूरी आधुनिकता से चमतकृत थी, तब गांधी वह पहले विचारक हैं जो सभ्यता में मनुष्य विरोधी होने की समीक्षा करते हैं , और इस प्रवृत्ति का विरोध करते हैं। गांधी में निरंतरता का प्रवाह है। उन्होंने कहा कि यदि ब्रूनो भारत में पैदा हुआ होता तो उसे जलाया नहीं जाता और यदि गैलेलियो भारत का होता तो उसे जेल न होती। यह भरतीयता की परंपरा है जहां प्रश्न खडे करने की स्वतंत्रता हमें अपनी संस्कृति से मिली है। उन्होंने हिंद स्वराज को स्वतंत्रता के इतिहास में तत्व चिंतन की किताब कहा। उन्होंने याद दिलाया कि अंग्रेजों द्वारा हिंद स्वराज कभी प्रतिबंधित नहीं हुई।

विशेष व्याख्यान का धन्यवाद ज्ञापन हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र के एसोशिएट निदेशक, डॉ. अशोक नाथ त्रिपाठी ने किया। इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के प्राध्यापक और शोध छात्र एवं विद्यार्थी भारी संख्या में उपस्थित रहे।